रात्रिक्लास 10.6.68 :– जो बाप को याद करते हैं उनके लिए खुशी ही बस है। खुशी में नींद नहीं आती है; क्योंकि कमाई होती है। खुशी है धन में। तुम बच्चों को खुशी है यह। आगे तुम थे देहअभिमानी। अभी तो हो देहीअभिमानी। देवताएं नई दुनिया में थे। अभी नहीं हैं। इन देवताओं को देवता किसने बनाया। फिर वह कहाँ गये। किसको भी पता नहीं है। बाप कहते हैं मैं आता हूँ। बाप बिगर कोई समझा न सके। वह है टीचर। इन आँखों से देखने में नहीं आता। समझा जाता है। अपने आत्मा को ही नहीं देखा है तो बाप को कैसे देखेंगे। तुम भी समझते हो भक्ति मनुष्य मनुष्य सिखलाते हैं। वह है शास्त्रों की पढ़ाई। बाप कहते हैं यह सभी है भक्ति मार्ग। इनसे मनुष्य सद्गति को नहीं पाते। सद्गति ज्ञान से होती है। बाकी भक्ति से दुर्गति को पाते हैं। बाप नॉलेजफुल है। बच्चों से ही बात करते हैं। आत्मा ही सभी कुछ करती है। संस्कार आत्मा ही ले जाती है। शिवबाबा ज्ञान का सागर है तो ज्ञान कैसे दे। ज्ञान से ही समझते हैं हमको ज्ञान सागर पढ़ाते हैं। सभी आत्माएं कहती है, हे! परमपिता परमात्मा हमारे दुःख हरो। शरीर द्वारा पुकारती है। वह कोई सुनते नहीं हैं। सुनते जब शरीर में हैं। ऐसे नहीं ईश्वर सभी कुछ जानते हैं। बड़ी समझने की बात हैं। अच्छा बच्चों को गुडनाइट।